पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.12.2018 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

माता सुशीला-हरिदेव
आर्य स्मृति दिवस
य[illegible] संगीत संध्या
र[illegible] 23 दिसम्बर 2018,
सायं 4 से 7 बजे तक
आर्य समाज, सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली
—यशोवीर आर्य, संयोजक

वर्ष-35 अंक-13 मार्गशीर्ष-2075 दयानन्दाब्द 194 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.12.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी हेतु केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की विशाल कार्यकर्त्ता बैठक सोल्लास सम्पन्न

दिल्ली के बाहर से पधारने वाले आर्य जनों का हार्दिक स्वागत –अनिल आर्य

आर्य समाज, पंजाबी बाग विस्तार,दिल्ली के प्रधान श्री आर.पी.सूरी का अभिनन्दन करते मंत्री सुभाष मित्तल, नरेन्द्र आर्य सुमन, पी. एस. दहिया, अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, चन्द्रमोहन खन्ना, ओम सपरा, सुनील सहगल।

रविवार, 18 नवम्बर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली की विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक आर्य समाज,पंजाबी बाग विस्तार,नई दिल्ली में आर्य नेता श्री आर.पी. सूरी की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई। पश्चिमी दिल्ली की आर्य समाजों ने तन, मन, धन से सहयोग देने का हर सम्भव आश्वासन प्रदान किया। सभी आर्य जन पूरे उत्साह के साथ सरोबार थे। प्रमुख रूप से आर्य नेता रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, सुभाष मितल, विश्वनाथ आर्य,सुरेन्द्र कोछड़, डा. विपिन खेड़ा, चन्द्रमोहन खन्ना, नरेन्द्र आर्य सुमन, ओम सपरा, अमरसिंह सहरावत, नरेश विग, दुर्गेश आर्य, अशोक आर्य, सुनील सहगल, जगदीशशरण आर्य, धर्मपाल आर्य, राजीव सूरी, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य आदि उपस्थित थे। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए दिल्ली के बाहर से पधारने वाले आर्यो से अपील की कि उनका दिल्ली सम्मेलन में हार्दिक स्वागत है। परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई ने कुशल संचालन किया।

विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक को सम्बोधित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य

आर्य समाज, रेलवे रोड,रानी बाग व देव नगर का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 18 नवम्बर 2018, आर्य समाज,रेलवे रोड,रानी बाग,दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य अखिलेश्वर जी ने यज्ञ करवाया,आचार्य गवेन्द्र शस्त्री के प्रवचन हुए व बहिन स्वर्णा आर्या के मधुर भजन हुए। चित्र में–परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य व प्रवीन आर्या का अभिनन्दन करते समाज के प्रधान श्री सोमनाथ पुरी व अवधेश आर्य आदि। कुशल संचालन मैथिली शर्मा ने किया। द्वितीय चित्र–रविवार, 25 नवम्बर 2018, आर्य समाज,देव नगर,करोल बाग,दिल्ली के वार्षिकोत्सव का समापन हुआ। चित्र में–श्री अनिल आर्य का स्वागत करते प्रधान श्री सुशील बाली,मंत्री रमेश बेदी,सुधीर घई आदि।

"देश और समाज को अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले आदर्श महापुरुष ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द"

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में जिस प्राचीन वैदिक कालीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का विवरण प्रस्तुत किया था उसे साकार रूप देने का स्वप्न उनके प्रमुख अन्यतम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्वनाम महात्मा मुंशीराम) ने लिया था। उन्होंने इसके लिये अपना सर्वस्व अर्पण किया। इतिहास में शायद ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। उन्होंने अपना पूरा जीवन, समस्त धन दौलत, भौतिक सम्पत्ति सहित अपने दोनों पुत्र भी गुरुकुलीय पद्धति को समर्पित किये थे। गुरुकुल को स्थापित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो त्याग व बलिदान किया उसका उल्लेख उनके जीवनीकार पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी ने अपनी पुस्तक 'स्वामी श्रद्धानन्द' में किया है। हम उसी विवरण को यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

गुरुकुल की स्थापना के सम्बन्ध में 'जो बोले सो कुण्डा खोले' की कहावत महात्मा मुंशीराम जी पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने शिक्षा की जिस पुरातन आर्ष पद्धति को पुनर्जीवित करने पर अपने ग्रन्थों में जोर दिया है, इसके लिए महात्मा जी ने हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति पैदा हुई कि उसके पीछे भिखारी बन गये। गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव आपने ही आर्य जनता के सम्मुख उपस्थित किया था। उस प्रस्ताव को मूर्त रूप दने के लिए आप को ही गांव–गांव घूम कर गले में भिक्षा की झोली डाल कर चालीस हजार रुपया *जमा करना पड़ा (आजकल के हिसाब से यह धनराशि लगभग 15 से 25 करोड़ के* बीच हो सकती है –मनमोहन) और घर–बार त्याग कर स्वयं भी गुरुकुल में आकर बसेरा डालना पड़ा। उस के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता होकर उसको पालने–पोसने और आदर्श शिक्षणालय बनाने का सब काम भी आप को ही करना पड़ा। हृदय के दो टुकड़े–दोनों पुत्र शुरू में ही गुरुकुल के अर्पण कर दिये गये थे। फलती–फूलती हुई वकालत रूपी हरा पौधा भी गुरुकुल के ही पीछे मुरझा गया था। पहिले ही वर्ष, सन् 1902 में आपने अपना सब पुस्तकालय गुरुकुल को भेंट किया। सम्वत् 1908 में लाहौर आर्यसमाज के तीसवें उत्सव पर सद्धर्म प्रचारक प्रेस भी, जिसकी कीमत आठ हजार से कम नही थी, गुरुकुल के चरणों पर चढ़ा दिया। तीस हजार से अधिक लगा कर खड़ी की गई जालन्धर की केवल एक कोठी बाकी थी। उसको भी सन् 1911 में गुरुकुल के दसवें वार्षिकोत्सव पर गुरुकुल पर न्यौछावर कर दिया। सभा ने उसको बीस हजार में बेच कर यह रकम गुरुकुल के स्थिर कोष में जमा की। यह सब उस हालत में किया गया था जबकि आपके सिर पर हजारों का ऋण था और गुरुकुल से निर्वाहार्थ भी आप कुछ नहीं लेते थे। कोठी दान करते हुए सभा के प्रधान के नाम लिखे एक पत्र में आपने लिखा था "मुझे इस समय 3600 रुपये ऋण देना है, वह मैं अपने लेख आदि की आय से चुका दूंगा। इस मकान से उस ऋण का कोई सम्बन्ध नहीं है।"

इस पर भी छिद्रान्वेषी लोगों के ये आक्षेप थे कि आप अपने पुत्रों के लिए कुछ न छोड़ कर पीछे उन पर कर्ज का भार लाद जायेंगे। मुंशीराम जी ने वह सब ऋण उतार कर और सन्तान को गुरुकुल की सर्वोच्च शिक्षा से अलंकृत करके ऐसे सब लोगों के मुंह बन्द कर दिये थे। इस प्रकार तन, मन, धन सर्वस्व आपने गुरुकुल को अर्पण कर दिया। अध्यापकों एवं कर्मचारियों पर भी इसका इतना असर पड़ा कि प्रायः सबने अपने वेतन में कमी कराई और एक–एक मास का वेतन गुरुकुल को दान में दिया। अन्त में आप ने अपना स्वास्थ्य भी गुरुकुल के पीछे मिट्टी कर दिया। सन् 1908 में आप को लाहौर में हर्निया का आपरेशन तक कराना पड़ा। पर, वह सब कष्ट सदा के लिए ही बना रहा। पेटी बांधने पर भी वह कष्ट कभी–कभी उग्र रूप धारण कर लेता था। कई बार पांच–पांच, छः–छः मास के लिए डाक्टर बाधित करके आप को क्वेटा, कसौली आदि पहाड़ी स्थानों पर भेजते थे, पर आपको एक–दो महीने में ही गुरुकुल की चिन्ता वहां से वापिस लौटी लाती थी। गुरुकुल के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए जो दौरे आपको करने पड़ते थे, उनसे स्वास्थ्य को बहुत धक्का लगता था। सन् 1910, 1911 और 1912 में गुरुकुल से विद्यार्थियों का शुल्क लेना बन्द कर लिया गया था। उन वर्षों में आपको बजट की पूर्ति के लिए जो कठोर परिश्रम करना पड़ा, उसका स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा। सन् 1914 में आपने गुरुकुल के लिए 15 लाख रुपये की स्थिर निधि जमा करने के लिए कठिन परिश्रम शुरू किया ही था कि स्वास्थ्य ने साथ नहीं दिया। मानो अपने स्वास्थ्य की आपने उस सर्वमेध यज्ञ में अन्तिम आहुति दी थी, जिसका अलौकिक अनुष्ठान आपने आपने अपने जीवन रूपी यज्ञकुण्ड में किया था। आपने अपने को गुरुकुल के साथ इस प्रकार तन्मय कर दिया था कि आप के व्यक्तित्व और गुरुकुल के अस्तित्व को एक–दूसरे से अलग करने वाली किसी स्पष्ट रेखा का अंकित करना संभव नहीं था। वैसे मुंशीराम जी के हृदय में इस सर्वमेध–यज्ञ के अनुष्ठान की भावना बहुत पहले ही पैदा हो चुकी थी।

सन् 1891 की डायरी के 5 पौष (12 जनवरी) के पृष्ठ मे लिखा हुआ है–"मातृभूमि के पुनरुद्धार के लिए बड़े तप–युक्त आत्मसमर्पण की आवश्यकता है। बार–रूम में वकील भाइयों के साथ इस पेशे से धर्माधर्म के विषय में बातचीत हुई। मैं बार–बार अपने आत्मा से प्रश्न कर रहा हूं कि वैदिक धर्म की सेवा का व्रत धारण किये हुए क्या मैं वकील रह सकता हूं? मार्ग क्या है? कौन बतलाएगा? अपने स्वामी परमपिता से ही कल्याण–मार्ग पूछना चाहिये। यह संशयात्मक स्थिति ठीक नहीं। अपने देश तथा धर्म की सेवा के लिए पूरा आत्म–समर्पण करना चाहिये। परन्तु परिवार भी एक बड़ी रुकावट है। संदिग्ध अवस्था में हूं। कुछ निश्चय शीघ्र होना चाहिए। कृष्ण भगवान् ने कहा—संशयात्मा विनश्यति। पिता, तुम ही पथ प्रदर्शक हो।" यही नहीं, एक वर्ष पहिले सन् 1890 के 15 माघ की डायरी में भी लिखा हुआ है "गृहस्थ मुझे अन्तरात्मा की आवाज सुनने से रोकता है, नहीं तो बहुत काम हो सकता था। फिर भी जो कुछ कर सकता हूं, उसके लिए परमात्मा को धन्यवाद है।" ऐसे उद्धरण और भी दिये जा सकते हैं और उनकी समर्थक कुछ घटनाए भी उद्धृत की जा सकती है, किन्तु इतने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि मुंशीराम जी गृहस्थ और वकालत दोनों के बन्धन काट कर देश और धर्म की वेदी पर पूरे आत्म–समर्पण अथवा सर्वमेध–यज्ञ के अनुष्ठान की तय्यारी बहुत पहिले से ही कर रहे थे। इसीलिए पतिव्रता पत्नी के असामयिक देहावसान के बाद पैंतीस–छत्तीस वर्ष की साधारण आयु, छोटे–छोटे बच्चों के लालन–पालन की विकट समस्या और मित्रों व सम्बन्धियों का सांसारिक प्रलोभनों से भरा हुआ अत्यन्त आग्रह होने पर भी मुंशीराम जी फिर से गृहस्थ में फंसने का विचार तक नहीं कर सकते थे।

निवृत्ति के मार्ग की ओर मुंह किये हुए महात्मा जी के लिए आत्म–समर्पण करने का अवसर उपस्थित होने पर फलती–फूलती वकालत भी रुकावट नहीं बन सकी। राजभवन की मोह–माया और ममता के सब बन्धन एक साथ तोड़ कर घोर तपस्या के लिए जंगल का रास्ता पकड़ने वाले बुद्ध के समान मुंशीराम जी ने भी वेद की इस वाणी को हृदयंगम करते हुए 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रोऽजायत' की भावना से चण्डी पहाड़ की तराई में हरिद्वार में गंगा के उस पार विकट जंगलों का रास्ता पकड़ा। कहते हैं त्यागी दयानन्द ने भी सन् 1824 के कुम्भ के बाद सर्वत्यागी होकर केवल लंगोटी रख तपस्या को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए इन्हीं जंगलों का रास्ता पकड़ा था। गुरुकुल की वह भूमि, मुंशीराम जी के सर्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान की यज्ञभूमि होने से, प्राचीन ऋषि–मुनियों की दण्डकारण्य की भूमि के समान ही आप के लिए तपोभूमि बन गई। उठती हुई आयु के वैभव–सम्पन्न होने के जीवन के सर्वश्रेष्ठ भाग को उस बीहड़ जंगल में गुरुकुल के रूप में पूर्ण स्वतन्त्र उपनिवेश बसाने में लगा देने के कारण उस भूमि को आपकी कर्मभूमि कहना चाहिए। गंगा की धारा के प्राकृतिक प्रकोप के प्रतिकूल एक नयी सृष्टि की रचना करने वाले महात्मा मुंशीराम जी ही उस भूमि के ब्रह्मा थे। उस भूमि का छोटे से छोटा परिवर्तन भी आपकी आंखों के सामने हुआ था। गुरुकुल की वाटिका में लगाये गये एक–एक पौधे और उसमें बखेरे गये एक–एक बीज को आपका आशीर्वाद प्राप्त था। उस भूमि में खड़े किये गये मकानों की नींव तक में भरी हुई एक–एक रोड़ी और उस रोड़ी पर जमाई गई एक–एक इंर्ट में आपके त्याग की भावना कुछ ऐसी समाई हुई थी, जैसे आपने अपने हाथों से ही उनको चुना हो। घूमने की सड़कें, खेलने के मैदान और आश्रम तथा विद्यालय के दालान, सारांश यह कि गुरुकुल की सबकी सब रचना आपके महान् व्यक्तित्व की जीती जागती निशानी थी। ब्रह्मचारी और कर्मचारी ही नहीं, उस भूमि के पशु, पक्षी, वनस्पति और जंगम सृष्टि तक में आपके सर्वस्व अर्पण की स्पष्ट छाया दीख पड़ती थी। मुंशीराम जी के लिए यह सर्वत्र–अर्पण अथवा सर्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान एक विस्तृत गृहस्थ का बोझ था। आपके सार्वजनिक जीवन के जिस भाग को इस जीवनी में वानप्रस्थ का नाम दिया जा रहा है, उसके लिए आप कहा करते थे–"मैं अधिकतर गृहस्थ में फंस गया हूं। आपका यही विस्तृत गृहस्थ गुरुकुल कांगड़ी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।"

इन पंक्तियों को पढ़कर हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का सर्वस्व त्यागी स्वरूप प्रत्यक्ष होता है। उन्होंने जिस गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की वह आजादी व उसके कुछ वर्षों बाद तक फूला फला। वर्तमान स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी व महर्षि दयानन्द के विचारों व भावनाओं के अनुकूल हमें प्रतीत नहीं होता। स्वामी श्रद्धानन्द जी की यह जीवनी "स्वामी श्रद्धानन्द" नाम से 'हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोन सिटी' द्वारा प्रकाशित की गई है। यदि किसी को आदर्श आर्य के जीवन के दर्शन करने हों तो वह आपको इस जीवनी में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन को पढ़कर मिलेगा। स्वामी जी का जीवन बहुआयामी था। उन्होंने देश की आजादी व समाज सुधार के अनेक कार्यों को किया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री रहे रैम्जे मैकडोनाल्ड ने उन्हें जीवित ईसामसीह की उपाधि दी थी। स्वामी जी की आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' एक उत्तम आत्मकथा है। आर्य विद्वान डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी ने 'एक विलक्षण व्यक्तित्व – स्वामी श्रद्धानन्द' नाम से स्वामी श्रद्धानन्द जी पर पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक भी उत्तम कोटि का ग्रन्थ हैं। आप इन ग्रन्थों को पढ़कर अपने जीवन को श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा ले सकते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोन:09412985121

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ओ३म्॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु
डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में
स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026 (मेट्रो स्टेशन, पंजाबी बाग)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा : शनिवार, 2 फरवरी 2019, प्रातः 10.30 बजे से

रूटः पंजाबी बाग स्टेडियम से शुभारम्भ वाया वेस्ट एवेन्यू, सेन्ट्रल मार्किट, आर्य समाज, गुरु नानक स्कूल, लाल बत्ती से बाएं, नॉर्थ एवेन्यू, क्लब रोड, मादीपुर चौक से दाएं, मादीपुर गांव, अरिहन्त नगर, वेस्ट एवेन्यू होकर वापिस स्टेडियम पर समापन।

संयोजक-लॉयन प्रमोद सपरा, वीरेश बुग्गा, डॉ. दीपक सचदेवा, डॉ. विपिन खेड़ा, विश्वनाथ आर्य, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, राकेश भटनागर, योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, डॉ. विशाल आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, के.एल. राणा, ओमवीर सिंह, दिनेश आर्य, के.के. यादव, ईश आर्य, देवदत्त आर्य, विक्रांत चौधरी, विपिन मित्तल, जीवनलाल आर्य, सीमा-रोहित धींगड़ा, के.के सेठी, माधव सिंह, अशोक सरदाना, डिम्पल-नीरज भंडारी, नरेश विग, सुनील अग्निहोत्री, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र कोछड़, वेदप्रकाश आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, अरुण बंसल, सुरेन्द्र मानकटाला, महेन्द्र मनचन्दा

शुक्रवार 1 फरवरी, 2019

101 कुण्डीय विराट यज्ञ	:प्रातः 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	:प्रातः 10.45 बजे
आर्य महिला सम्मेलन	:11.00 से 2.00 बजे
आर्य युवा सम्मेलन	:2.15 से 5.00 बजे
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	:5.00 से 6.00 बजे
भव्य संगीत संध्या	:रात्रि 7.00 से 9.00 बजे

शनिवार 2 फरवरी, 2019

यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 9.30
ध्वजारोहण	: प्रातः 10.00 बजे
राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	: प्रातः 10.30 से 1.30
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30
सामुहिक सन्ध्या	: सायं 5.30 से 6.00
वेद संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: रात्रि 7.00 से 9.00

रविवार 3 फरवरी, 2019

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रातः 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति बचाओ सम्मेलन	: 2.30 से 4.30
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: सायं 4.30 से 5.00 बजे
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 5.30 बजे

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या व समय के बारे में व यज्ञमान बनने के इच्छुक 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबंध किया जा सके। सम्पर्क : देवेन्द्र भगत-9958889970, दुर्गेश आर्य-9868664800, राजीव आर्य-9968079062 सुनील सहगल-9968074213, सौरभ गुप्ता-9971467978, अरुण आर्य-9818530543, वरुण आर्य-8586801154, विनोद कालरा-9899444347

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	आनन्द चौहान	डॉ. रिखबचन्द जैन	सुभाष आर्य	सुरेन्द्र कोहली
राष्ट्रीय अध्यक्ष	रामकुमार सिंह	ठाकुर विक्रम सिंह	डॉ. लाजपत राय आर्य	कैलाश सांकला	नरेन्द्र आर्य सुमन
महेन्द्र भाई	सुभाष बब्बर	मायाप्रकाश त्यागी	योगराज अरोड़ा	रवि चड्डा	गायत्री मीना
राष्ट्रीय महामंत्री	स्वतन्त्र कुकरेजा	चन्द्रमोहन खन्ना	रमेश कुमारी भारद्वाज	राजेन्द्र लाम्बा	बलदेव जिन्दल
सुरेश आर्य	आनन्द प्रकाश आर्य	प्रदीप तायल	धर्मपाल कुकरेजा	बलदेव सचदेवा	डॉ. गजराज सिंह आर्य
सुशील आर्य	राम कृष्ण शास्त्री	प्रवीन तायल	प्रेम कुमार सचदेवा	सत्यानन्द आर्य	ब्रह्मप्रकाश मान
राष्ट्रीय मंत्री	कृष्ण प्रसाद कौटिल्य	अमित मान	प्रिं. अंजु महरोत्रा	आर.पी. सूरी	रविदेव गुप्ता
धर्मपाल आर्य	भानुप्रताप वेदालंकार	विकास गोगिया	सत्यवीर चौधरी	सुभाष मित्तल	ए.के. धवन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागतमंत्री		

स्वागत समितिःआ. प्रेमपाल शास्त्री, ओम सपरा, धर्मपाल परमार, अंजु जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, देवमित्र आर्य, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्पकरणा, जितेन्द्र डावर, गवेन्द्र शास्त्री, प्रवीण भाटिया, राजरानी अग्रवाल, विवेक-हीरालाल चावला, डॉ. विनोद क्षेत्रपाल, अमरनाथ बत्रा, भोपाल सिंह आर्य, अरविन्द आर्य, विजय भास्कर, विजयारानी शर्मा, अमीरचन्द रखेजा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, राजेन्द्र निझावन, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, रामलुभाया महाजन, आदर्श आहूजा, प्रदीप गोगिया, सुशील बाली, डॉ. धर्मवीर आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, अशोक आर्य, बृजेश-पीतम गुप्ता, रमेश गाडी, सरोज-जवाहर भाटिया, मनोहरलाल चावला, हरिचन्द स्नेही

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9213402628, 9871581398, 9013137070
E-mail: aryayouth@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य समाज, अशोक विहार फेज-1 व निर्माण विहार का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 25 नवम्बर 2018, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य सतीश शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, आचार्य यशपाल शास्त्री के प्रवचन हुए व कविता आर्या के मधुर भजन हुए। चित्र में–आचार्य विजय भूषण आर्य का अभिनन्दन करते देवेन्द्र भगत, अनिल आर्य, प्रधान प्रेमकुमार सचदेवा, मंत्री जीवन लाल आर्य, राजवीर शास्त्री आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 18 नवम्बर 2018, आर्य समाज, निर्माण विहार, दिल्ली के वार्षिकोत्सव का समापन हुआ। चित्र में–आचार्य छविकृष्ण शास्त्री प्रवचन करते हुए। साथ में मंच पर आचार्य सतीश सत्यम, रवि बहल, महेन्द्र भाई, वेदव्रत शर्मा व डा. उषाकिरण आर्या।

यज्ञ निष्ठ, दानवीर माता सरोज अग्निहोत्री का निधन

शनिवार, 24 नवम्बर 2018 को श्रीमती सरोज कुकरेजा अग्निहोत्री (धर्मपत्नि श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री) का निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा मंगलवार, 27 नवम्बर 2018 को आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। आर्य जगत के गणमान्य स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री आनन्द चौहान, श्री योगेश मुन्जाल,डा. वागीश आचार्य,डा.महेश विद्यालंकार, श्री महेन्द्र भाई,श्री धर्मपाल आर्य,श्री विनय आर्य,माता पुष्पलता वर्मा, सुनीता बुग्गा, रचना आहुजा, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री,आर्य तपस्वी सुखदेव जी,बहिन गायत्री मीना,ई.प्रेमप्रकाश शर्मा, श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री योगराज अरोड़ा, श्री राजीव चौधरी, श्री नवीन रहेजा, डा. सुनील रहेजा, प्रवीन आर्या, प्रकाश कथुरिया, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, उर्मिला आर्या, ओम सपरा आदि उपस्थित रहे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, सुरेश आर्य, के. एल. राणा, मायाराम शास्त्री, गवेन्द्र शास्त्री, कै. अशोक गुलाटी, वेदप्रकाश आर्य, अनिल हाण्डा आदि अनेकों प्रतिष्ठित आर्य जन उपस्थित थे। सुनीता बुद्धिराजा जी ने कुशल संचालन व अनिल आर्य ने आभार व्यक्त किया।

परिषद् की शिक्षक कार्यशाला व आर्य समाज, पूर्वी पंजाबी बाग का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 25 नवम्बर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के शिक्षकों की कार्यशाला आर्य समाज, सूर्य निकेतन, दिल्ली में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री यशोवीर आर्य की अध्यक्षता में व प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता के संयोजन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,पूर्वी पंजाबी बाग,दिल्ली में आयोजित महिला सम्मेलन में प्रधाना ललिता जी, मंत्री प्रोमिला गुप्ता, मधु बेदी, प्रवीन आर्या, सोनल सहगल, आशा गोयल, विदुषी आयुषी राणा आदि।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

९२वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

रविवार, 23 दिसम्बर 2018 को
प्रातः 11 बजे सांसद
श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा के
निवास, 20, विंडसर पैलेस, जनपथ रोड़,
नई दिल्ली में मनाया जायेगा ।
सभी आर्य जन/आर्य युवक
ठीक प्रातः 10.45 पर स्थान ग्रहण कर लें।
–अनिल आर्य,संयोजक, 9868051444

अपीलः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड -SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित। –अनिल आर्य, मो.09810117464

आर्य कार्यकर्त्ता बैठक शनिवार, 8 दिसम्बर को

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन व 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ की व्यापक तैयारी हेतु विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक शनिवार, 8 दिसम्बर 2018 को प्रातः 11.30 बजे सार्वदेशिक सभा मुख्यालय, महर्षि दयानन्द भवन, आसिफ अली रोड, नई दिल्ली में बुलाई गई है। कृपया सभी साथी समय पर पंहुचने की कृपा करें। –महेन्द्र भाई, महामन्त्री,9013137070

जनसंख्या नियन्त्रण कानून लागु करो –डा. रिखबचन्द जैन

रविवार, 25 नवम्बर 2018 को भारतीय मतदाता संगठन ने नई दिल्ली के इण्डिया गेट पर केन्द्र सरकार से 18 वर्ष से लम्बित वेंकट चलैया कमीशन की सिफारिश "जनसंख्या नियन्त्रण कानून" लागु करने की मांग की। डा. रिखबचन्द जैन ने कहा कि देश के विकास के लिये समान रूप से हम दो, हमारे दो, सबके दो लागु हो, यह आज अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री बी.एन.चौधरी (शिक्षाविद व पूर्व प्रधान, आर्य समाज, पश्चिम विहार, दिल्ली) का निधन।
2. श्री वृद्धिचन्द गुप्ता (आर्य समाज कृष्ण पोल बाजार जयपुर) का निधन।
3. श्री लवकुश चावला (आर्य समाज रानी, बाग दिल्ली) का निधन।
4. श्री एन के. खन्ना (गाजियाबाद) की धर्मपत्नी का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970